GLOBALCULTURZ

journal.globalculturz.org

VOL. I, No. 2, Ma[illegible]

International Journal of Culture & Global Studies

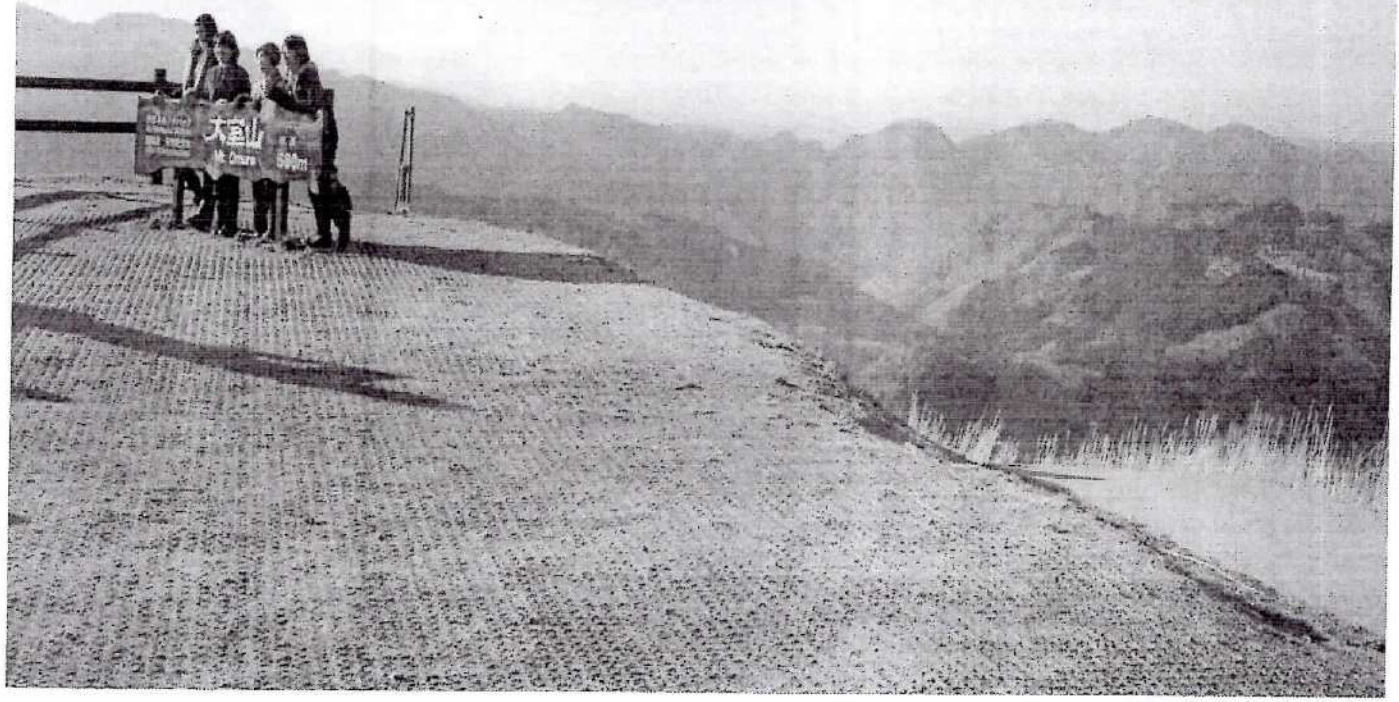

CENTER FOR CULTURE & GLOBAL STUDIES

In This Issue

Editorial & Selected Commentaries 127-137

Influnce of Motivational Motivational Movies on Coping Strategies of Physically Challenged Adults (Ramita Choudhary) 138-145

Contribution of Cinema in Managing Parental Stress in Dealing with Dyslexia in Child: A Case Study of the Hindi Film 'Taare Zameen Par' (Sujit Kumar/Manali Takkar) 146-150

वैश्विक संवेदना की दो असाधारण कहानियां: यारेग़ार और प्रलय में नाव (प्रो० रमेश अनुपम) 151-160

डगमग राहों का पथिक: बच्चन की आत्मकथा (राम प्रकाश द्विवेदी) 161-173

दिव्यांगता को लेकर समाज, सरकार और मीडिया की भूमिका (विनीत भार्गव) 174-179

नवजागरण काल का स्त्री स्वर (गौरी त्रिपाठी) 180-188

'ब्लैक' फिल्म में दिव्यांग-सशक्तिकरण (आशा) 189- 194

हिन्दी सिनेमा में दिव्यांग स्त्री छवि (रश्मि शर्मा) 195-201

दिव्यांगता से संपूर्णता के दिग्दर्शन कराती देशी – विदेशी फिल्में (मधु लोमेश) 202-207

Title: नवजागरण काल का स्त्री स्वर

Article-ID **202008015/I** GLOBALCULTURZ **Vol.I No.2** May-August 2020

Language: Hindi

Domain of Study: Humanities & Social Sciences

Sub-Domain: Literature-Criticism

गौरी त्रिपाठी (डॉ0)

एसोसिएट प्रोफेसर,हिन्दी विभाग, गुरु घासीदास केंद्रीय विश्वविद्यालय कोनी ,बिलासपुर छत्तीसगढ़ -495001 भारत

[E-mail: tripathigauri07@gmail.com] [Mob [redacted]

Summary in English

The Research Paper entitled "**NAVJAGRAN KAAL KA STRI SWAR**" aims to investigate the contributions of renaissance movements in Indian Society. This work gives a brief account of the position of women in early Indian society and the role played by social reformers for socio- economic development of women through various movements. The work highlights the particular efforts of Brahmasamaj, Arya Samaj, Theosophical Society, Ramakrishna Mission and Prarthana Samaj and different renowned Reformer's noble piece of work in bringing up women into the vanguard of Indian society.

भारत में नवजागरण को हम बड़े परिवर्तन के रूप में देखते हैं ।19वीं सदी की शुरुआत से दस्तक शुरु हो जाती है । वैसे यह सामाजिक बुनियादी परिवर्तनों के शुरुआती संदर्भ में लिया जाता है लेकिन एक मुख्य बात जो राष्ट्रीय नव जागरण के संदर्भ में सबसे महत्वपूर्ण बन जाती है वह है स्त्री सवाल । स्त्री को मुख्य सामाजिक सवालों के केन्द्र में लाया जाता है । सबसे बड़ी बात थी कि इस नवजागरण काल में स्त्रियों की स्थिति सुधारने के लिए आंदोलनों की शुरुआत हुई |आधुनिक शिक्षा या पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव के कारण समाज सुधारकों का ध्यान स्त्रियो की सामाजिक दशा की तरफ जाने लगा ।ऐसा बिल्कुल भी नहीं था कि आधुनिक काल अपने स्त्री के प्रति सारे